Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

मध्यकालीन भारत

(राजस्थान के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM17

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

मध्यकालीन भारत

(राजस्थान के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**पूर्व मध्यकालीन भारत**	**5-39**
1.1	पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश	5
1.2	पल्लव वंश	10
1.3	चालुक्य वंश	13
1.4	चोल राजवंश	14
1.5	भारतीय सामंतवाद	19
1.6	भारत पर अरबों का आक्रमण	20
1.7	तुर्क आक्रमणों के पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति	21
1.8	मुहम्मद गोरी के प्रमुख सैन्य अभियान	22
1.9	राजस्थान के प्रमुख राजवंश	25
2.	**दिल्ली सल्तनत**	**40-74**
2.1	गुलाम वंश	40
2.2	खिलजी वंश	45
2.3	तुगलक वंश	52
2.4	सैयद एवं लोदी वंश	58
2.5	सल्तनतकालीन प्रशासन	61
2.6	सल्तनतकालीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति	66
2.7	सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य	70
3.	**क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13–15वीं सदी**	**75-82**
3.1	मालवा	75
3.2	मेवाड़	76
3.3	गुजरात	76
3.4	जौनपुर	78
3.5	कश्मीर	78
3.6	बंगाल	79
3.7	असम	79
3.8	उड़ीसा	80

4. विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य **83-96**

4.1 विजयनगर : राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति 83

4.2 विजयनगर : सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 88

4.3 बहमनी साम्राज्य 90

5. भक्ति एवं सूफी आंदोलन **97-106**

5.1 भक्ति आंदोलन 97

5.2 सूफी आंदोलन 101

6. मुगल साम्राज्य **107-147**

6.1 मुगल बादशाह : बाबर एवं हुमायूँ 107

6.2 शेरशाह : प्रशासक एवं सुधारक 110

6.3 मुगल बादशाह : अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगज़ेब 113

6.4 मुगल और दक्कन 123

6.5 मुगल प्रशासन 123

6.6 सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 131

6.7 स्थापत्य एवं कला 133

6.8 उत्तर मुगल काल 140

7. मराठा साम्राज्य **148-160**

7.1 मराठा साम्राज्य का उत्कर्ष 148

7.2 मुगल-मराठा संघर्ष 153

अध्याय
1

पूर्व मध्यकालीन भारत
(Pre Medieval India)

भारतीय इतिहास में काल विभाजन एक बहुत बड़ी समस्या रही है। सामान्यत: 8वीं से 11वीं शताब्दी के काल को पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। राजनीतिक विकेंद्रीकरण, छोटे-छोटे राज्यों का उदय एवं उनमें आपसी संघर्ष होना जहाँ इस काल की राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है, वहीं बंद अर्थव्यवस्था, सामंती सामाजिक जीवन, धर्म में विविधता इस काल की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विशेषता थी।

1.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश
(Pala, Gurjar–Pratihar and Rashtrakut Dynasty)

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में राजसत्ताओं के त्वरित उत्थान-पतन का काल रहा। इस समय उत्तर भारत और दक्कन में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही इतिहास के एक महान युग का अंत हो गया। इसके साथ ही 1000 वर्षों से राजनीति का केंद्र रहे मगध का महत्त्व भी हमेशा के लिये समाप्त हो गया। संक्रमण के इस काल में उत्तर भारत में कन्नौज राजनीति के आकर्षण का नया केंद्र बनकर उभरा। सातवीं सदी में हर्ष के राज्यारोहण के बाद कन्नौज की सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर थी। हर्ष के शासनकाल तक उत्तर भारत की राजनीतिक सत्ता अक्षुण्ण बनी रही, परंतु 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के साथ ही उत्तर भारत में राजनीतिक अराजकता पैदा हो गई। इसी पृष्ठभूमि में नए राजवंशों व राज्यों को उदय होने का अवसर मिला।

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर तीन गुटों में कई वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। ये तीन गुट थे- पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट। इनमें से पाल साम्राज्य का नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी बंगाल में बोलबाला रहा। पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार साम्राज्य की तूती बोलती थी। उधर दक्कन में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर और दक्षिण भारत के प्रदेशों पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे। यद्यपि इन तीनों साम्राज्यों के बीच संघर्ष चलता रहा, तथापि इनमें से प्रत्येक ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों को स्थिरतापूर्ण जीवन की परिस्थितियाँ प्रदान की और साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। तीनों में सबसे दीर्घायु राष्ट्रकूट साम्राज्य साबित हुआ। इस साम्राज्य ने न केवल विपुल शक्ति अर्जित की, बल्कि आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु का काम भी किया। यहाँ हम पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट राजवंशों के विषय में क्रमश: अध्ययन करेंगे।

बंगाल का पाल राजवंश *(The pala dynasty of Bengal)*

पाल वंश की स्थापना संभवत: 750 ई. के आस–पास बंगाल (गौड़) में हुई थी। शशांक की मृत्यु के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में अराजकता और अव्यवस्था का माहौल बना हुआ था। उस क्षेत्र में फैली अराजकता से तंग आकर वहाँ के प्रमुख लोगों ने गोपाल को शासक चुना। यह पहला राजा था, जिसका जनता के द्वारा निर्वाचन हुआ। उसने गौड़ में फिर से सुव्यवस्था स्थापित की तथा करीब दो दशकों तक शासन किया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था तथा उसने ओदंतपुरी महाविहार की स्थापना भी की थी। 770 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र धर्मपाल राजा बना।

धर्मपाल ने बंगाल पर 770 से 810 ई. तक शासन किया। उसने राज्य का सर्वप्रथम विस्तार किया। कुछ समय के लिये उसने कन्नौज पर अपना अधिकार स्थापित किया था तथा उसने 'उत्तरापथस्वामिन्' की उपाधि धारण की। वह बौद्ध धर्मानुयायी था किंतु वह अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु था। बिहार और आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश पर अपना-अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिये पालों और प्रतिहारों के मध्य संघर्ष चलता रहा, यद्यपि बंगाल के साथ-साथ बिहार पर पालों का ही अधिक समय तक नियंत्रण कायम रहा।

धर्मपाल का उत्तराधिकारी उसका पुत्र देवपाल अगला शासक बना। देवपाल ने 810 से 850 ई. तक शासन किया तथा इसने भी साम्राज्य विस्तार की नीति जारी रखी। उसने मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया तथा प्रागज्योतिषपुर (असम) और

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- कल्याणी के चालुक्य वंश का उदय राष्ट्रकूटों के पतन के बाद हुआ।
- सोमेश्वर प्रथम ने मान्यखेत से अपनी राजधानी कल्याणी (कर्नाटक) में स्थापित की।
- 'मिताशरा' के लेखक विशानेश्वर एवं एक अन्य लेखक विल्हण विक्रमादित्य-VI के दरबार में ही रहते थे।
- पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को हराकर 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की थी।
- विक्रमादित्य द्वितीय के समय में दक्कन में अरबों का आक्रमण हुआ।
- ऐहोल को 'मंदिरों का शहर' कहा जाता है।
- वेंगी के चालुक्य वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन ने अपनी राजधानी वेंगी बनाई।
- वेंगी वंश आधुनिक आंध्र की कृष्णा व गोदावरी नदियों के बीच फैला हुआ था।
- अन्हिलवाड़ा चालुक्य (सोलंकी) वंश के भीम प्रथम (1024-1064 ई.) के काल में माउंट आबू में दिलवाड़ा जैन मंदिर बनाया गया।
- जयसिंह सिद्धराज के दरबार में जैन विद्वान हेमचंद्र रहते थे।
- पुलकेशिन के ऐहोल अभिलेख में कालिदास का वर्णन है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 641 ई. में पल्लवों की राजधानी कांची की यात्रा की थी।
- 'किरातार्जुनीय' के लेखक भारवि सिंह विष्णु के दरबार में रहते थे।
- महाबलीपुरम् के एकाश्म मंदिरों का निर्माण नरसिंहवर्मन प्रथम ने करवाया था।
- कांची के कैलाशनाथ मंदिरों का निर्माण नरसिंहवर्मन-II ने करवाया था।
- अरबों के आक्रमण के समय पल्लव राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय था।
- दशकुमारचरित के लेखक दंडी, नरसिंहवर्मन द्वितीय के दरबार में रहते थे।
- पल्लवकालीन न्यायालयों को 'अधिकरण' या 'धर्मासन' कहा जाता था।
- गुर्जर-प्रतिहार, बंगाल के पाल एवं राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।
- राणा कुंभा के दरबार में प्रमुख विद्वान थे- अत्रि, नापा, महेश भट्ट, मुनिसुंदर सूरी, टिल्ला भट्ट आदि।
- माध्यमिका (नगरी) का उल्लेख महाभारत और महाभाष्य दोनों में मिलता है।
- 'मान कौतूहल' एक ग्रंथ है जिसका नाम मध्यकाल के समय ग्वालियर के राजा मानसिंह के नाम पर रखा गया। इस पुस्तक में मुस्लिमों द्वारा प्रारंभ की गई संगीत की पद्धतियों का वर्णन है।
- राजपूताना के बयाना क्षेत्र पर वरीक वंश ने शासन किया।
- शिवालिक अभिलेख में विग्रहराज चतुर्थ की तुलना विष्णु से की गई है, जबकि 'पृथ्वी विजय' में उसे 'मधुसंहारक' (विष्णु का एक नाम) कहा गया है।
- महाराणा कुंभा की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं- संगीतराज, संगीत मीमांसा, सूड़ प्रबंध। संगीत राज की रचना वि.सं. 1509 में चित्तौड़ में की गई, जिसकी पुष्टि कीर्ति-स्तंभ प्रशस्ति से होती है।
- चौहान व गुहिल शासक विद्वानों के प्रश्रयदाता बने रहे, जिससे जनता में शिक्षा एवं साहित्यिक प्रगति बिना अवरोध के होती रही। इसी कारण पूर्व मध्यकाल में पराभवों के बावजूद राजस्थान बौद्धिक उन्नति में नहीं पिछड़ा।
- वर्तमान हाड़ौती के क्षेत्र पर चौहानवंशीय हाड़ा राजपूतों का अधिकार था।
- अनेक वंशों के संस्थापक इस प्रकार से हैं।
  - गुर्जर-प्रतिहार वंश - नागभट्ट प्रथम
  - पाल वंश - गोपाल
  - सोलंकी वंश - मूलराज प्रथम
  - चंदेल वंश - नन्नुक
  - चालुक्य वंश (कल्याणी) - तैलप II
  - चालुक्य वंश (वातापी) - जयसिंह
  - चालुक्य वंश (वेंगी) - विष्णुवर्धन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर-प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिये- **RAS (Pre) 2016**
(1) आहड़ का आदिवराह मंदिर
(2) आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर
(4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट:
(1) 1 और 4 (2) 1, 2 और 4
(3) 2 और 4 (4) 1, 2, 3 और 4

2. नवीं शताब्दी ई. में निम्नलिखित में से किसके द्वारा चोल साम्राज्य की नींव डाली गई? **RAS (Pre) 2016**
(1) विजयालय (2) कृष्ण-I
(3) परांतक (4) राजराज चोल

3. निम्नलिखित में से राजपूताना के किस क्षेत्र पर वरीक वंश ने शासन किया था? **RAS (Pre) 2013**
(1) बदनौर (2) ओसियाँ
(3) बयाना (4) अलवर

4. सुमेलित करो पुस्तकों के नाम को उनके लेखकों से, और दिये हुए कूट में से सही उत्तर का चयन करें- **RAS (Pre) 2013**

पुस्तक	लेखक
(A) आलमगीर नामा	(i) मुअतमद खाँ
(B) तबकाते अकबरी	(ii) मुंशी मोहम्मद काजिम
(C) चहार चमन	(iii) चंद्रभान ब्रह्मन
(D) इकबाल नामा-ए-जहाँगिरी	(iv) निजामुद्दीन अहमद

कूट:

	A	B	C	D
(1)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(2)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(3)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(4)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

5. 'किताब-उल-हिंद' रचना के प्रसिद्ध लेखक का क्या नाम था? **RAS (Pre) 2010**
(1) हसन निजामी (2) मिनहाज-उस-सिराज
(3) अलबरूनी (4) शम्स-ए-सिराज आफिक

6. चीनी यात्री जिसने भीनमाल की यात्रा की थी: **RAS (Pre) 2007**
(1) फाह्यान (2) संगयुन
(3) ह्वेनसांग (4) इटिसंग

7. औरंगजेब ने जोधपुर के शासक जसवंत सिंह को 1658 ई. के 'धरमत के युद्ध' में पराजित किया था। धरमत किस राज्य में स्थित है?
(1) राजस्थान (2) मध्य प्रदेश
(3) उत्तर प्रदेश (4) हरियाणा

8. निम्नलिखित में से किसने राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली?
(1) अमोघवर्ष प्रथम (2) दंतिदुर्ग
(3) ध्रुव (4) कृष्ण प्रथम

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:

सूची-I	सूची-II
(A) सोलंकी वंश	(i) विष्णुवर्धन
(B) कलचुरी वंश	(ii) कोकल्ल
(C) चालुक्य (वेंगी)	(iii) मूलराज प्रथम
(D) राष्ट्रकूट	(iv) दंतिदुर्ग

कूट:

	A	B	C	D
(1)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(2)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(3)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(4)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

10. दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप में द्रविड़ वास्तुकला एवं शिल्पकला शैली के प्रवर्तक कौन थे?
(1) चोल (2) होयसल
(3) पल्लव (4) पांड्य

11. संस्कृत के कवि व नाटककार कालिदास का उल्लेख हुआ है?
(1) पुलकेशिन-II के ऐहोल अभिलेख में
(2) मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेखों में
(3) खारवेल के हाथीगुंफा अभिलेख में
(4) रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में

12. ऐहोल अभिलेख की भाषा है-
(1) संस्कृत (2) तमिल
(3) तेलुगु (4) इनमें से कोई नहीं

13. दशकुमारचरित के लेखक दंडी किस शासक के दरबार में रहते थे?
(1) नरसिंहवर्मन प्रथम (2) नरसिंहवर्मन द्वितीय
(3) पुलकेशिन प्रथम (4) पुलकेशिन द्वितीय

14. महाबलीपुरम् के एकाश्म मंदिरों का निर्माण करवाया-
(1) नरसिंहवर्मन द्वितीय ने (2) पुलकेशिन प्रथम ने
(3) नरसिंहवर्मन प्रथम ने (4) सिंहविष्णु ने

15. 'खानवा का युद्ध' जिसे राजस्थान के इतिहास में सीमा चिह्न माना जाता है, किन शासकों के बीच यह युद्ध संपन्न हुआ?
    (1) राणा सांगा एवं महमूद खिलजी के बीच
    (2) राणा सांगा एवं इब्राहिम लोदी के बीच
    (3) राणा सांगा एवं बाबर के बीच
    (4) राणा सांगा एवं मानसिंह के बीच
16. किस राजपूत शासक ने मुगलों के विरुद्ध निरंतर स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रखा और समर्पण नहीं किया?
    (1) बीकानेर के राजा रायसिंह
    (2) मारवाड़ के राव चंद्रसेन
    (3) आमेर के राजा भारमल
    (4) मेवाड़ के महाराजा अमरसिंह
17. मध्यकालीन राजस्थान के किस शासक को 'अभिनव भरताचार्य' के नाम से पुकारा गया?
    (1) पृथ्वीराज चौहान (2) महाराणा कुंभा
    (3) सवाई जयसिंह (4) महाराजा मान
18. राजपूतों के किस वंश ने जयपुर रियासत पर शासन किया था?
    (1) सिसोदिया (2) कछवाहा
    (3) राठौड़ (4) हाड़ा
19. राजस्थान का प्रथम चौहान राज्य था:
    (1) अजमेर (2) रणथंभौर
    (3) हाड़ौती (4) नाडोल
20. जिस चालुक्य शासक ने हर्ष को पराजित कर परमेश्वर की उपाधि धारण की, वह था-
    (1) पुलकेशिन प्रथम (2) पुलकेशियन द्वितीय
    (3) तैलप-II (4) कुलोतुंग

उत्तरमाला

1. (4)	2. (1)	3. (3)	4. (4)	5. (3)	6. (3)	7. (2)	8. (2)	9. (2)	10. (3)
11. (1)	12. (1)	13. (2)	14. (3)	15. (3)	16. (2)	17. (2)	18. (2)	19. (1)	20. (2)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में दीजिये)

1. कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष किन राजवंशों के मध्य हुआ था?
2. कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति का क्या महत्त्व है? बताइये।
3. ऐहोल अभिलेख के विषय में बताइये।
4. मत्तविलास प्रहसन क्या है?
5. चालुक्यकालीन दो करों (Tax) के नाम बताइये।
6. कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान के किस शासक को 'सैनिक का भग्नावशेष' कहा है?
7. चालुक्यकालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालिये।

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. चोलकालीन प्रशासन के प्रमुख अभिलक्षणों पर प्रकाश डालिये।
2. सामंतवाद के विकास में भूमि अनुदान प्रथा की भूमिका पर टिप्पणी लिखें।
3. भारतीय सामंतवाद तथा यूरोपीय सामंतवाद के बीच मुख्य अंतरों को रेखांकित कीजिये।
4. पल्लव काल अपनी कला के लिये प्रसिद्ध था। चर्चा कीजिये।
5. चालुक्यकालीन कला का वर्णन कीजिये।
6. गुर्जर-प्रतिहार वंश को समझाइये।
7. राणा कुंभा के सांस्कृतिक योगदान को संक्षेप में समझाइये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. राजपूत काल के दौरान भारत की सामाजिक संरचना पर लेख लिखिये।
2. क्या आपके विचार में अरबों की सिंध विजय एक महत्त्वहीन घटना थी? तर्क सहित समझाइये।
3. तुर्कों के आक्रमण के समय की भारतीय परिस्थितियों की विवेचना कीजिये।
4. चालुक्यकालीन राजनीतिक व प्रशासनिक स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
5. राजस्थान के प्रमुख राजवंशों पर टिप्पणी लिखिये।

अध्याय
2

दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

1206 ई. में मोहम्मद गोरी की आकस्मिक मृत्यु के कारण उत्तराधिकारी के संबंध में कोई निश्चित निर्णय नहीं लिया जा सका। गोरी का कोई पुत्र नहीं था, बल्कि उसके कई दास थे। उन दासों में तीन की स्थिति लगभग एक समान थी। अत: उन तीनों ने आपस में उसके साम्राज्य को बाँट लिया। इसके अंतर्गत यल्दौज को गज़नी का राज्यक्षेत्र, कुबाचा को सिंध और मुल्तान का क्षेत्र तथा कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय राज्यक्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त हुआ।

1206 से 1290 ई. तक उत्तर भारत के कुछ भागों पर जिन तुर्क शासकों ने शासन किया उन्हें गुलाम वंश, मामलुक वंश, इल्वारी वंश व प्रारंभिक तुर्क आदि नामों से जाना जाता है।

2.1 गुलाम वंश *(Slave Dynasty)*

तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में तुर्कों द्वारा भारत में स्थापित प्रथम साम्राज्य को **गुलाम वंश** का नाम दिया गया। गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी, जो मोहम्मद गोरी का एक प्रमुख गुलाम था तथा आरंभिक तुर्क साम्राज्य को सुदृढ़ करने वाले सुल्तान इल्तुतमिश, बलबन आदि किसी-न-किसी शासक के गुलाम ही थे।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है। वह भारत में स्थापित तुर्क साम्राज्य का प्रथम शासक था।
- शासक बनने के बाद ऐबक ने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की, न उसने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न ही अपने नाम के सिक्के चलाए बल्कि वह केवल **मलिक** और **सिपहसालार** की पदवियों से ही खुश रहा।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को 1208 ई. में दासता से मुक्ति मिली। उसने लाहौर से ही शासन का संचालन किया तथा लाहौर ही उसकी राजधानी थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक एक वीर एवं उदार हृदय वाला सुल्तान था, वह लाखों में दान दिया करता था। अपनी असीम उदारता के कारण उसे **लाखबख्श** कहा गया।
- ऐबक ने **हसन निज़ामी** और **फख्र-ए-मुदब्बिर** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया तथा प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** के नाम पर दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव रखी, जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।
- उसने दिल्ली में ही **कुव्वत-उल-इस्लाम** मस्जिद का निर्माण करवाया, जिसे भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित प्रथम मस्जिद माना जाता है तथा अजमेर स्थित **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** नामक मस्जिद का भी निर्माण उसी ने करवाया।
- 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से अचानक गिर जाने के कारण ऐबक की अकस्मात् ही मृत्यु हो गई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका अयोग्य एवं अनुभवहीन पुत्र आरामशाह शासक बना जिसके कारण अमीरों ने स्वतंत्रता की

गुलाम वंश के शासक

शासक	शासनकाल
1. कुतुबुद्दीन ऐबक	1206 - 1210 ई.
2. आरामशाह	1210 - 1211 ई.
3. शम्सुद्दीन इल्तुतमिश	1211 - 1236 ई.
4. रुकनुद्दीन फिरोज़शाह	1236 ई.
5. रज़िया सुल्तान	1236 - 1240 ई.
6. मुइज़ुद्दीन बहरामशाह	1240 - 1242 ई.
7. अलाउद्दीन मसूदशाह	1242 - 1246 ई.
8. नासिरुद्दीन महमूद	1246 - 1265 ई.
9. गयासुद्दीन बलबन	1266 - 1286 ई.
10. मोइज़ुद्दीन कैकुबाद	1287 - 1290 ई.
11. कैयूमर्स	1290 ई.

अध्याय
3

क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13-15वीं सदी
(Territorial Powers : 13–15th Century)

मध्य एशियाई आक्रमणकारी तैमूर लंग ने 1398 ई. में दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण किया। उसके आक्रमण ने जहाँ एक ओर तुगलक राजवंश का पतन कर दिया, वहीं दूसरी ओर दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया तीव्र कर दी। तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर ही कई क्षेत्रीय शक्तियों का उद्भव हुआ। इन क्षेत्रीय शक्तियों में उत्तरी भारत में **मालवा, जौनपुर, मेवाड़, कश्मीर, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा व असम** प्रमुख थे जबकि दक्षिण भारत में **विजयनगर और बहमनी** प्रमुख राज्य थे।

इन क्षेत्रीय शक्तियों की स्वतंत्रता तब तक ही (लगभग 200 वर्ष) बनी रही जब तक कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन नहीं हुआ था। इस समय उद्भूत हुई क्षेत्रीय शक्तियों की सबसे बड़ी खामी थी कि ये आपस में निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्षरत थी, जैसे– विजयनगर और बहमनी साम्राज्य, मालवा एवं जौनपुर तथा बंगाल का राज्य आदि। यही कारण था कि ये राज्य द्वारा कभी भी विस्तृत साम्राज्य की स्थापना नहीं कर पाए।

3.1 मालवा *(Malwa)*

मालवा का राज्य नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था। इस प्रांत को 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली सल्तनत में शामिल किया था, परंतु तुगलक वंश के पतन के दौरान तुगलक गवर्नर **दिलावर खाँ** ने 1401 ई. में स्वतंत्र **मालवा** साम्राज्य की स्थापना की।

मालवा आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध राज्य था। पठारी क्षेत्र होने के कारण इसका सामरिक महत्त्व भी था। यहाँ के सुल्तानों ने राजधानी **मांडू** में अनेक भव्य एवं सुंदर महलों, मस्जिदों एवं मकबरों का निर्माण करवाया था। जहाज़ महल, हिंडोला महल और जामा मस्जिद मांडू वास्तुकला की प्रसिद्ध इमारतें हैं। गुजरात एवं जौनपुर मालवा के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी राज्य थे जिनमें आपस में हमेशा प्रतिस्पर्द्धा होती रहती थी।

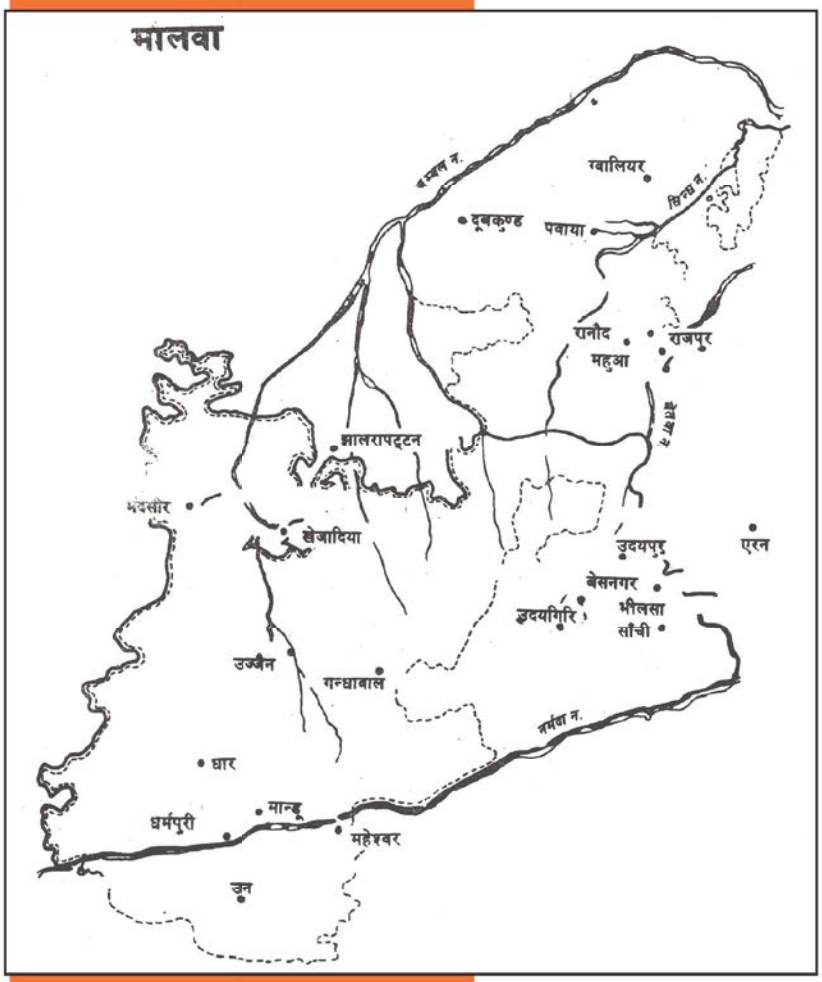

- **दिलावर खाँ** का वास्तविक नाम हुसैन था। उसने अपनी पुत्री का विवाह खानदेश के

अध्याय
4

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य
(Vijayanagar and Bahmani Empire)

14वीं शताब्दी के प्रथम चरण या मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में लगभग संपूर्ण दक्षिण भारत दिल्ली सल्तनत में शामिल किया जा चुका था। उसने दक्षिणी प्रांतों में मज़बूत सत्ता स्थापित करने के लिये कुछ प्रयास भी किये, जैसे– विजित प्रदेशों को प्रांतों में विभाजित किया, दौलताबाद में नई राजधानी बनाई, परंतु सारे प्रयास असफल हो गए और दक्षिण के क्षेत्रों ने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह के क्रम में दक्षिण भारत में दो नवीन साम्राज्यों का उदय हुआ– विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य। यद्यपि इन दोनों राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपाय किये गए परंतु दोनों के बीच तब तक आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हो गया। इस प्रकार दक्षिण भारतीय इतिहास में विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

4.1 विजयनगर : राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति
(Vijayanagar : Political and Administrative Status)

विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी। कहा जाता है कि **हरिहर** और **बुक्का** वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने जब वारंगल पर आक्रमण कर राज्य को नष्ट कर दिया, तब दोनों भाई (हरिहर और बुक्का) **कांपिली** अथवा **अनेगोंडी** (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण कर दिया तथा विजयोपरांत हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया। इन दोनों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये विवश किया गया। उसके उपरांत इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया, परंतु दोनों भाइयों ने दक्षिण भारत में प्रारंभ हुई तुर्क सत्ता की विरोधी गतिविधियों में योगदान दिया तथा इस्लाम धर्म को त्यागकर शृंगेरी के प्रतिष्ठित गुरु **विद्यारण्य** की प्रेरणा से पुन: हिंदू धर्म स्वीकार कर तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर के नाम से बसाया और शासन करने लगे। 1336 ई. में हरिहर विजयनगर का शासक बना। हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर **संगम वंश** कहा गया।

प्रमुख राजवंश

राजवंश	संस्थापक	शासनकाल
संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	1336–1485 ई.
सालुव वंश	नरसिंह सालुव	1485–1505 ई.
तुलुव वंश	वीर नरसिंह	1505–1570 ई.
अरावीडू वंश	तिरुमल्ल	1570–1650 ई.

संगम वंश *(Sangama dynasty)*

संगम वंश	
शासक	शासनकाल
हरिहर-प्रथम	1336–1356 ई.
बुक्का-प्रथम	1356–1377 ई.
हरिहर-द्वितीय	1377–1404 ई.
बुक्का-द्वितीय	1405–1406 ई.
देवराय-प्रथम	1406–1422 ई.
देवराय द्वितीय	1422–1446 ई.
मल्लिकार्जुन	1446–1465 ई.
विरूपाक्ष द्वितीय	1465–1485 ई.

हरिहर-प्रथम (1336-1356 ई.)

विजयनगर साम्राज्य के संस्थापकों में से एक हरिहर प्रथम 1336 ई. में शासक बना। उसने प्रारंभ में अनेगोंडी को अपनी राजधानी बनाया परंतु बाद में साम्राज्य की राजधानी विजयनगर स्थानांतरित कर दी। उसने 1346 ई. में होयसल साम्राज्य को जीतकर उसे विजयनगर में शामिल कर लिया। 1352–53 ई. में मदुरै पर भी विजय प्राप्त कर ली।

अध्याय
5

भक्ति एवं सूफी आंदोलन
(Bhakti and Sufi Movement)

मध्यकालीन भारत के प्रारंभ में संतों तथा सूफियों के प्रयासों से हिंदू एवं इस्लाम धर्म में नवीन शक्ति एवं गतिशीलता का संचार हुआ, जिसे भक्ति एवं सूफी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ, जबकि सूफी आंदोलन इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध तथा तुर्की शासन में व्याप्त घुटन एवं उदासी को दूर करने के लिये हुआ।

भक्ति एवं सूफी आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना तथा प्रेम और उदारता का संदेश देना था। इन आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इन्हें न तो राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इनमें कोई विचलन आया।

5.1 भक्ति आंदोलन *(Bhakti movement)*

भक्ति आंदोलन का विकास मुख्यत: दो चरणों में हुआ। पहले चरण की शुरुआत दक्षिण भारत में 8वीं शताब्दी में हुई जो 13वीं शताब्दी तक चला, जबकि दूसरे चरण की शुरुआत 13वीं शताब्दी में हुई और यह 16वीं शताब्दी तक चला। इस चरण का प्रमुख क्षेत्र उत्तरी भारत रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों द्वारा हिंदू धर्म में व्याप्त विसंगतियों के सुधार हेतु काफी प्रयास किये गए। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को शुरू करने का श्रेय नयनार और अलवार संतों को प्राप्त है। नयनार शैव धर्म के अनुयायी थे, वहीं अलवार वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। इन नयनार तथा अलवार संतों द्वारा बौद्ध और जैन धर्म का विरोध किया गया तथा भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बताया गया। उन्होंने कर्मकांडों और अंधविश्वासों की निंदा की तथा अपने उपदेश जन-समुदाय को स्थानीय भाषा में दिये। यह एक समतावादी आंदोलन था, जिसमें जाति-धर्म तथा ऊँच-नीच का प्रबल विरोध किया गया था। प्रथम चरण के भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत निम्नलिखित थे–

शंकराचार्य

- शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म **केरल के कलाडी** में 788 ई. में हुआ था।
- इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद थे। उन्होंने भारत में ब्रह्म एवं ज्ञानवाद का प्रसार किया, इसलिये उनके सिद्धांत एवं दर्शन को **अद्वैतवाद** के नाम से जाना जाता है।
- शंकराचार्य ने भारत में धर्म की एकता के लिये तथा पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिये भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किये। 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित **केदारनाथ** में मात्र 32 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

दिशा	स्थान	मठ
उत्तर	बद्रीनाथ	ज्योतिषपीठ
दक्षिण	शृंगेरी	शृंगेरीपीठ
पूर्व	पुरी	गोवर्धनपीठ
पश्चिम	द्वारिका	शारदापीठ

रामानुज

- रामानुज 12वीं शताब्दी के प्रमुख संत थे, जिनका जन्म **तमिलनाडु के पेरंबदूर** में हुआ था। वे सगुण धारा के **वैष्णव** संत थे।
- उन्होंने शंकराचार्य के ज्ञानवादी अद्वैत दर्शन के विरोध में **विशिष्टाद्वैतवाद** का दर्शन दिया तथा ज्ञान के स्थान पर भक्ति को महत्ता प्रदान की।
- उन्होंने मनुष्य की समानता पर बल दिया, जाति व्यवस्था की भर्त्सना की एवं अपने क्रियाकलापों के लिये **काँची** और **श्रीरंगपट्टनम** में मुख्य केंद्र स्थापित किये।

अध्याय
6

मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन एक नवीन युग का परिचायक था। यद्यपि भारत में मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** था, जो विदेशी था और मंगोल तथा चंगेज खाँ जैसे आक्रमणकारियों का वंशज था, परंतु उसके और उसके वंशज द्वारा एक स्थिर सत्ता स्थापित की गई।

1404 ई. में तैमूरलंग की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी शाहरुख मिर्ज़ा के काल में मंगोल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इस राजनीतिक शून्यता को भरने के लिये कई नए राज्यों की स्थापना **ट्रांस-ऑक्सियाना** के क्षेत्रों में हुई, जैसे- **उज़बेक राज्य, सफवी राज्य** और **मुगल राज्य**। मुगल राज्य की स्थापना उमर शेख मिर्ज़ा के नेतृत्व में हुई, जो फरगना नामक छोटे राज्य के शासक थे। 1494 ई. में एक दुर्घटना में उमर शेख की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका पुत्र बाबर मात्र 12 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बना। बाबर बड़ा महत्त्वाकांक्षी शासक था। वह फरगना में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद तैमूर की राजधानी समरकंद को भी जीतना चाहता था और 1496 ई. में समरकंद पर अधिकार भी कर लिया, परंतु इस क्रम में फरगना भी हाथ से निकल गया।

उज़बेक सरदार तथा सफवी वंश के द्वारा बार-बार की पराजय ने बाबर को अपने पैतृक सिंहासन को प्राप्त करने के विचार को त्यागकर भारत में अपना भाग्य आज़माने के लिये विवश कर दिया। इसी क्रम में बाबर ने 1504 ई. में काबुल पर अधिकार कर लिया तथा 1507 ई. में पहली बार मिर्ज़ा की जगह **पादशाह** की उपाधि धारण की। बाबर ने जिस समय भारत पर आक्रमण किया, उस समय भारत में बंगाल, मालवा, गुजरात, सिंध, कश्मीर, मेवाड़, खानदेश, विजयनगर और बहमनी की रियासतें एवं दिल्ली जैसे स्वतंत्र राज्य थे।

6.1 मुगल बादशाह : बाबर एवं हुमायूँ *(Mughal Emperor : Babur and Humayun)*

बाबर के आक्रमण के समय दिल्ली में लोदी वंश के शासक इब्राहीम लोदी का शासन था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी तथा इब्राहीम के चाचा आलम खाँ लोदी ने दिया था। इस निमंत्रण से ही उसे दिल्ली सल्तनत के आंतरिक मतभेद का पता चल चुका था और कहा जाता है कि इसी समय मेवाड़ का शासक **राणा सांगा** के राजदूत ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया था।

बाबर (1526–1530 ई.) *[Babur (1526–1530)]*

- भारत में मुगल वंश की स्थापना बाबर ने 1526 ई. के पानीपत के युद्ध की विजय के बाद की थी, परंतु इस विजय से पूर्व वह भारत पर चार बार आक्रमण कर चुका था।
- बाबर को अरबी और फारसी का गहरा ज्ञान था, साथ ही उसकी मातृभाषा तुर्की थी। उसने 'तुज़ुक-ए-बाबरी' को तुर्की भाषा में लिखा जिसे बाद में अब्दुल रहीम ने फारसी में रूपांतरित (अनुवाद) किया जो विश्व साहित्य की एक अमर कृति मानी जाती है।
- बाबर ने भारत के विरुद्ध प्रथम अभियान 1519 ई. में **यूसुफजाई जाति** के विरुद्ध

पानीपत का प्रथम युद्ध

- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर और इब्राहीम लोदी के मध्य 21 अप्रैल, 1526 को हुआ, जिसे बाबर ने अपने कुशल सेनापतित्व और पोंतो के प्रयोग द्वारा जीत लिया। उसने इब्राहीम लोदी की एक विशाल सेना को पराजित कर भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी। इस युद्ध में बाबर ने उज़बेकों की युद्ध नीति **तुलगमा युद्ध पद्धति** तथा तोपों को सजाने की उस्मानी विधि का प्रयोग किया था।
- इस युद्ध की गणना भारतीय इतिहास में एक निर्णायक युद्ध के रूप में होती है। इब्राहीम लोदी युद्धस्थल में ही मारा गया और बाबर को दिल्ली तथा आगरा तक के क्षेत्र प्राप्त हो गए। साथ ही इब्राहीम लोदी के खज़ाने पर भी उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। इससे बाबर की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई और वह आगे का युद्ध भी जीत सका।

अध्याय
7

मराठा साम्राज्य
(Maratha Empire)

मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान ही मराठा शक्ति का उदय हुआ। मराठों के उदय में सर्वप्रथम योगदान क्षेत्र विशेष की भौगोलिक परिस्थितियों का था। मराठों का मूल निवास-क्षेत्र मराठवाड़ा तीन भागों में विभक्त था। पहला सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण तटवर्ती भाग, दूसरा सह्याद्रि का पर्वतीय क्षेत्र और तीसरा पूर्वी मैदान का पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्र। सह्याद्रि के तटवर्ती क्षेत्र को कोंकण एवं पर्वतीय क्षेत्र को मालवा के नाम से जाना जाता है। यहाँ कृषि कार्य कठिन था। प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मराठों में साहस, कठोर परिश्रम, आत्मसंयम जैसे गुणों का विकास हुआ। अपनी आजीविका को चलाने के लिये मराठे लूटपाट का सहारा लेते थे। मराठों में एकता की भावना जगाने में मराठी भाषा का सर्वाधिक योगदान रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों, जैसे– ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम और रामदास की शिक्षाओं ने मराठा राज्य के उदय में सहयोग दिया। ये संत जातिप्रथा का विरोध करते थे और स्थानीय मराठी भाषा में उपदेश देते थे। शिवाजी के गुरु रामदास ने महाराष्ट्र धर्म को प्रचारित किया।

मोडी लिपि

मोडी उस लिपि का नाम है, जिसका प्रयोग 1950 ई. तक महाराष्ट्र की प्रमुख भाषा मराठी को लिखने के लिये किया जाता था। मोडी शब्द की उत्पत्ति फारसी के शब्द शिकस्त के अनुवाद से हुई है, जिसका अर्थ होता है– 'तोड़ना या मोड़ना'। इसे हेमादपंत (हेमाद्रि पंडित) ने महादेव यादव और रामदेव यादव के शासनकाल के दौरान (1260-1309 ई.) विकसित किया था।

दक्षिण की राजनीतिक स्थितियों ने भी मराठों के उत्थान में सहयोग दिया। बहमनी राज्य के विखंडन तक मराठे अनुभवी लड़ाकू जाति के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे।

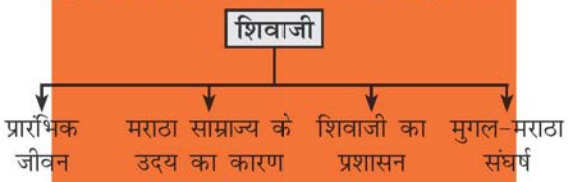

सर्वप्रथम मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में अहमदनगर के प्रधानमंत्री मलिक अंबर ने मराठों का सहयोग प्राप्त किया तथा मराठों को अपनी सेना में शामिल किया। सर्वप्रथम शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले अहमदनगर की सेना में शामिल हुए, फिर वह बीजापुर के सूबेदार हो गए। 1620 ई. में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गए। इस प्रकार जहाँगीर के काल में मराठे पहली बार मुगलों की सेवा में आए। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने शाहजी को 5000 का मनसब प्रदान किया, परंतु शीघ्र ही शाहजी ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और पुनः अहमदनगर आ गए। जनवरी 1664 में शाहजी की मृत्यु हो गई।

7.1 मराठा साम्राज्य का उत्कर्ष *(Rise of Maratha Empire)*

छत्रपति शिवाजी महाराज या शिवाजी राज भोंसले भारत के महान योद्धा एवं रणनीतिकार थे। उनका जन्म 1627 ई. में **शिवनेर** के किले में हुआ था। उनकी माता का नाम **जीजाबाई** और पिता **शाहजी भोंसले** थे। शिवाजी भोंसले वंश के थे। **दादोजी कोंडदेव शिवाजी** के संरक्षक थे। शिवाजी के ऊपर समर्थ गुरु रामदास का अत्यधिक प्रभाव था। उनका विवाह 1640 ई. में **साईबाई** के साथ हुआ था। शिवाजी ने अपना प्रथम सैन्य अभियान बीजापुर के आदिलशाही राज्य के विरुद्ध किया। 1643 ई. में उन्होंने **सिंहगढ़** का किला जीता और 1647 ई. में **कोंडाना** पर विजय प्राप्त की। इस विजय के उपरांत बीजापुर के सुल्तान द्वारा शाहजी बंदी बना लिये गए थे। इसलिये अपने पिता को रिहा कराने के लिये उन्होंने कोंडाना का किला छोड़ दिया।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456